



P-ISSN: 2706-7483
E-ISSN: 2706-7491
www.geojournal.net
IJGGE 2023; 5(1): 91-96
Received: 20-02-2023
Accepted: 25-03-2023

डॉ. सीमा श्रीवास्तव
आचार्या, भूगोल विभाग,
गोविन्द गुरु जनजातीय
विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा,
राजस्थान, भारत

मीना कुमारी
शोधार्थी, भूगोल विभाग, गोविन्द
गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय,
बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत

अलवर शहर में ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र के बदलते भूमि उपयोग का अध्ययन

डॉ. सीमा श्रीवास्तव, मीना कुमारी

DOI: <https://doi.org/10.22271/27067483.2023.v5.i1a.187>

संरांश

अलवर शहर में नगरीकरण के कारण तीव्र जनसंख्या वृद्धि हुई है, बढ़ती हुई जनसंख्या को विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए भूमि की उपलब्धता आवश्यक होती है। शहर में सुविधाएं विकसित करने के साथ-साथ ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में भी गुणवत्तायुक्त सुविधाओं का विकास कर शहर से जनसंख्या दबाव कम किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। मास्टर प्लान में ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र के विकास के प्रस्तावों के फलस्वरूप इस क्षेत्र के स्वरूप में विकासोन्मुख परिवर्तन आ रहा है। इससे पूर्व ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र ग्रामीण परिवेश के रूप में परिलक्षित थे तथा इनमें अधिकतर केवल आसपास के ग्रामीण लोगों को सुविधा प्रदान करने के लिए सुविधा दुकानें, प्राथमिक स्कूल, पटवार घर एवं ग्रामीण कुटीर उद्योग ही स्थापित थे। जनसंख्या भी सामान्य गति से बढ़ रही थी। अधिकांश कार्यशील लोग मुख्य सड़क में नित्य श्रमिक के रूप में कार्य करने जाया करते थे, परन्तु ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में ढांचागत, आवासीय, औद्योगिक, व्यावसायिक, जनसुविधाओं गतिविधियों पर अधिक जोर देने के कारण यहाँ विकास की नवीन लहर उत्पन्न हो गयी है। यहाँ पर अनेक औद्योगिक इकाईयाँ, राजकीय एवं वैयक्तिक संस्थान, यातायात एवं पेयजल, विद्युत आदि जन सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। इन प्रयासों के फलस्वरूप ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र की जनसंख्या, व्यावसायिक संरचना एवं जीवन शैली में बदलाव आ रहा है। अब इनके ग्रामीण स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है तथा नगरीय स्वरूप में विकास हो रहा है। जनसंख्या वृद्धि के कारण शहरी क्षेत्र के साथ-साथ ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। शहर की आकारिकी में लगातार परिवर्तन हो रहे हैं, जिस कारण ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र की आकारिकी भी परिवर्तित हो रही है, प्राकृतिक भू-दृश्यों में विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों का जमावड़ा बढ़ता जा रहा है, अर्थात् प्राकृतिक परिवेश में सांस्कृतिक परिवेश का युग्मन व सम्मिश्रण होता जा रहा है।

कूटशब्द: नगरीकरण, ग्रामीण-नगरीय उपान्त, ग्रामीण स्वरूप, विकासोन्मुख, जनसुविधाएँ

प्रस्तावना

अलवर शहरी क्षेत्र पर आबादी का बोझ कम करने के लिए आसपास के ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र को विकसित किया जा रहा है, जिनमें आवासीय, औद्योगिक, वाणिज्यिक, मनोरंजन क्षेत्र शामिल हैं। इनका उद्देश्य स्थानीय लोगों को अलवर शहर में जाए बिना ही रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन एवं मार्केट जैसी सुविधाएँ वहीं उपलब्ध हो सकें। अलवर शहर के ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में सार्वजनिक परिवहन को बेहतर करने से लोग शहर में रहने के बजाय काम खत्म करके वापस घर लौट सकते हैं, जिससे अलवर शहर पर जनसंख्या दबाव कम होता है। इन सभी क्षेत्रों में भूमि उपयोग को आवासीय क्षेत्र, वाणिज्यिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक क्षेत्र, मनोरंजक क्षेत्र, मिश्रित भूमि, पर्यटक सुविधा क्षेत्र एवं परिसंचरण क्षेत्र में विभक्त कर विकसित किया जा रहा है।

भूमि उपयोग में परिवर्तन को वन क्षेत्र में कमी, कृषि अयोग्य भूमि में वृद्धि, पड़त भूमि में कमी, आवासीय क्षेत्र में वृद्धि, वाणिज्यिक क्षेत्र में वृद्धि, औद्योगिक क्षेत्र में वृद्धि, नई एवं पक्की सड़कों का निर्माण, बंजड़ भूमि में कमी, वास्तविक बोया हुआ क्षेत्र में कमी, स्थाई चरागाह तथा अन्य गोचर भूमि में कमी, वृक्षों के झुंड तथा बाग क्षेत्र में कमी, ऊसर भूमि में कमी, डेयरी क्षेत्र का विकास, जलाशय/पहाड़ी क्षेत्र में कमी, मनोरंजन क्षेत्र का विकास, राजकीय एवं अर्द्ध राजकीय क्षेत्र, सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक क्षेत्र आदि बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र

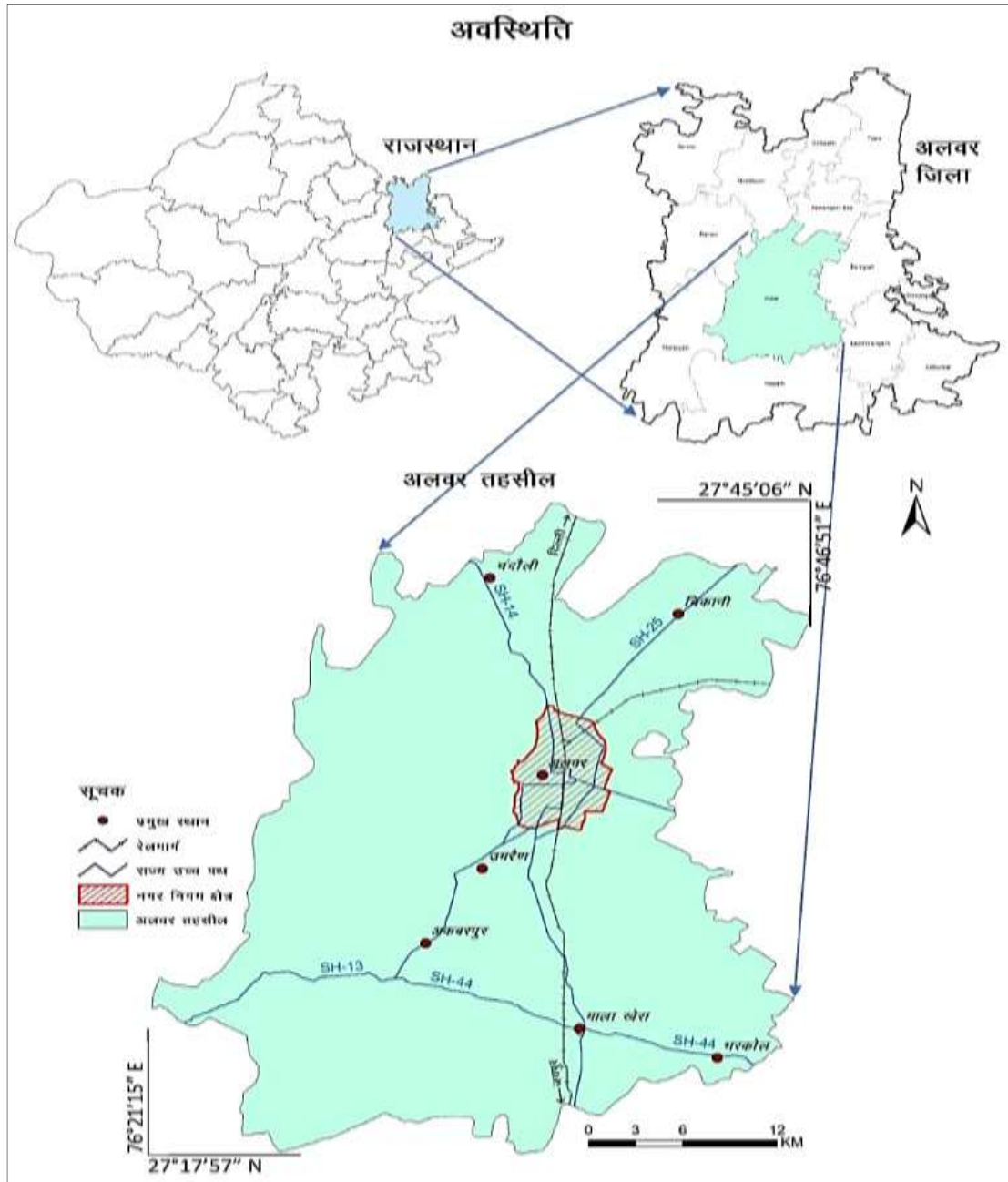
अलवर शहर 27°35' उत्तरी अक्षांश से 27°50' उत्तरी अक्षांश एवं 76°36' पूर्वी देशान्तर से 76°50' पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। इस शहर की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 268 मीटर है।

Corresponding Author:

मीना कुमारी
शोधार्थी, भूगोल विभाग, गोविन्द
गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय,
बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत

अलवर शहर अरावली पर्वतमाला की उपत्यका अथवा तली में जयपुर-दिल्ली रेलमार्ग पर स्वर्णिम त्रिकोण दिल्ली-आगरा-जयपुर के मध्य स्थित है। अलवर नगर विकास न्यास के अनुसार शहर का कुल क्षेत्रफल 225 वर्ग किमी. है। यह शहर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से 165 किलोमीटर, प्रदेश की राजधानी जयपुर से 151 किलोमीटर एवं भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र से 92 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह शहर उत्तर-पूर्वी राजस्थान का एक बड़ा एवं महत्वपूर्ण औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्र है। अलवर तहसील, जिले के मध्य में स्थित है, जिसके

पश्चिम में बानसूर एवं थानागाजी तहसीलें, उत्तर में मुण्डावर एवं किशनगढ़ बास तहसीलें, पूर्व में रामगढ़ एवं लक्ष्मणगढ़ तहसीलें तथा दक्षिण में राजगढ़ एवं रैणी तहसीलें स्थित हैं। भारत सरकार द्वारा समेकित विकास क्षेत्र योजना में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परियोजना के अन्तर्गत अलवर नगर को क्षेत्रीय नगर के रूप में चुना गया। जिसमें दिल्ली सहित हरियाणा, राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश के कुछ जिले सम्मिलित हैं। भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र को अलवर नगर कुशल एवं अकुशल श्रम उपलब्ध कराता है।



मानचित्र 1: अलवर शहर की अवस्थिति

उद्देश्य

1. अलवर शहर में जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन करना।
2. विगत वर्षों में अलवर शहर के भूमि उपयोग का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. विगत वर्षों में अलवर शहर के ग्रामीण-नगरीय उपाप्त क्षेत्र के भूमि उपयोग में परिवर्तन हुआ है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों तथा परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए विषय पर उपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित किताबों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रतिवेदनों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की सूचनाएँ सरकारी कार्यालयों से एकत्रित करके विश्लेषित की गयी हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सामग्री तथा आंकड़ों का एकत्रीकरण निम्नलिखित स्रोतों से किया गया है –

1. **प्राथमिक स्रोत** : इस सम्बन्ध में अनुसूची, प्रश्नावली, कार्यकरण तथा परिचर्चा के बारे में व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से उपयोग किया गया है।
2. **द्वितीय स्रोत** : इस सम्बन्ध में प्रकाशित व अप्रकाशित सामग्री, पत्र-पत्रिकाओं, लेखों, उद्योगों की सूचनाओं का उपयोग किया गया है।

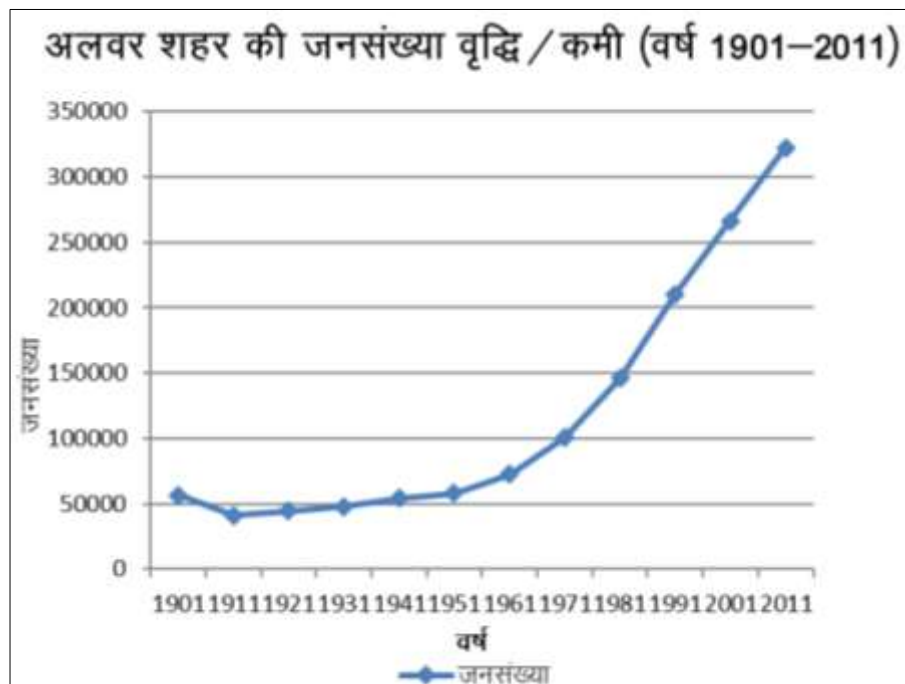
जनसंख्या वृद्धि

अलवर शहर की जनसंख्या वर्ष 1901 में 56771 थी, जो कि 1911 में घटकर 41305 रह गयी। वर्ष 1921 में यह कुछ बढ़कर 44760 हुई एवं 1931 में 47900 हो गयी, जो दस वर्ष बाद 1941 में बढ़कर 54143 हो गई अर्थात् 6243 लोगों की वृद्धि हुई जो पिछले दशक की तुलना में 13.03 प्रतिशत वृद्धि हुई। पिछले 50 वर्षों में (1961–2011) यहाँ की जनसंख्या में पाँच गुने से अधिक वृद्धि हुई है। वर्ष 1961 में अलवर नगर की जनसंख्या 72707 थी तथा वर्ष 2011 में यहाँ की जनसंख्या 322568 थी।

तालिका 1: अलवर शहर की जनसंख्या वृद्धि दर 1901–2011

वर्ष	कुल जनसंख्या	दस वर्ष का अन्तर	प्रतिशत वृद्धि दर
1901	56771	—	—
1911	41305	(-) 15466	(-) 27.24
1921	44760	(+) 3455	(+) 08.36
1931	47900	(+) 3140	(+) 07.00
1941	54143	(+) 6243	(+) 13.03
1951	57868	(+) 3725	(+) 6.88
1961	72707	(+) 14859	(+) 25.64
1971	100378	(+) 27671	(+) 38.10
1981	145795	(+) 45417	(+) 55.25
1991	210146	(+) 64351	(+) 44.14
2001	266203	(+) 56057	(+) 26.67
2011	322568	(+) 56365	(+) 21.17
2011'	361400	(+) 25197	(+) 35.76

स्रोत: जनगणना विभाग, राजस्थान-1901 से 2011



आरेख 1: अलवर शहर की जनसंख्या वृद्धि/कमी

गत दशक 2001–2011 के मध्य जनसंख्या वृद्धि के कारण शहर का विकास नगर परिषद की सीमा से बाहरी क्षेत्रों में अधिक हुआ है। वर्ष 2011 की जनगणना में शहरी क्षेत्र के समीप के चार गाँव क्रमशः मन्नका, दिवाकरी, बेलाका और भूगोर को शामिल किया गया है। परन्तु अनेक ऐसे भी गाँव हैं, जो अलवर के विकसित शहरी क्षेत्र से जुड़े हुए हैं, जैसे देसूला, लिवारी, गून्दपूर, घिघौली, गोलेटा, रायसीस, भाखेडा, बुर्जा, केशपुर पालका, नाहरपुर, धौलीदूब आदि। अतः इन्हें अलवर शहरी क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाना उचित समझा गया। इन सभी गाँवों को मिलाकर अलवर के विद्यमान नगरीकृत क्षेत्र की वास्तविक जनसंख्या वर्ष 2011 में 361400 व्यक्ति हो गई, जो वर्ष 2001 में 266203 व्यक्ति थी। अतः अलवर के विद्यमान शहरी क्षेत्र की वास्तविक जनसंख्या वृद्धि दर 2001–2011 के दशक में 35.76 प्रतिशत थी। अलवर नगरीकृत क्षेत्र में सम्मिलित गाँवों की

जनसंख्या वृद्धि दर 2001–2011 में 40.34 प्रतिशत थी। इस वृद्धि दर का प्रमुख कारण यहाँ पर होने वाले आर्थिक विकास के कारक जैसे औद्योगिक क्षेत्र, मण्डी, यातायात सुविधा का विस्तार आदि हैं।

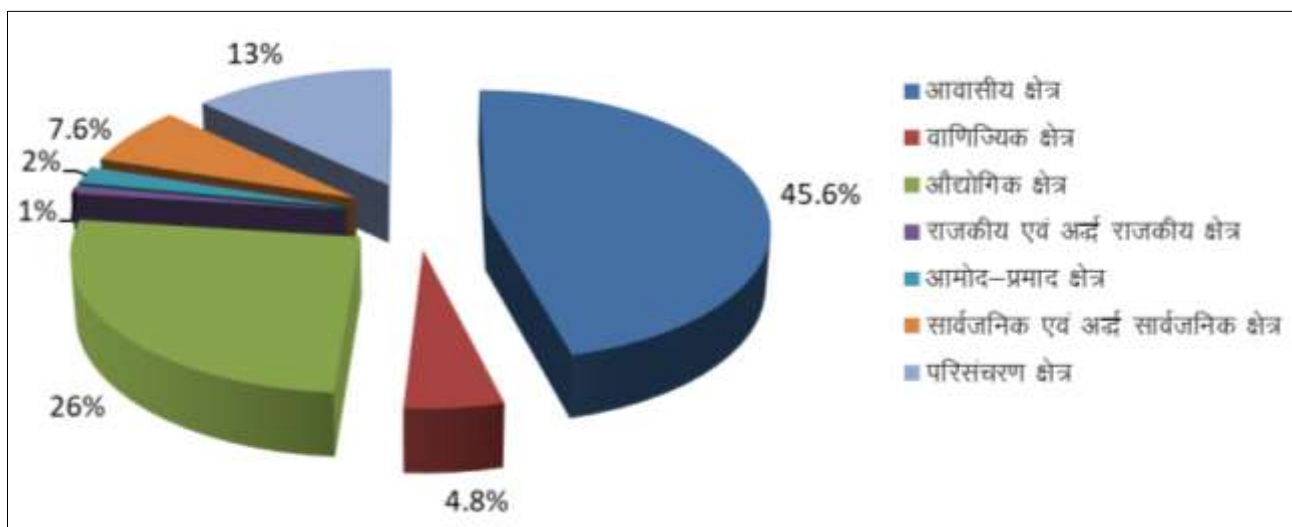
भूमि उपयोग

भूमि उपयोग किसी भी क्षेत्र में भूमि पर किए जा रहे कार्यों के अनुसार भूमि का वर्गीकरण होता है, ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के भूमि उपयोग में एक बहुत बड़ा अन्तर पाया जाता है। नगरीय भूमि उपयोग में आवासीय क्षेत्र, वाणिज्यिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, राजकीय एवं अर्द्ध राजकीय क्षेत्र, सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक क्षेत्र आमोद-प्रमोद क्षेत्र, परिसंचरण क्षेत्र आदि सम्मिलित किए जाते हैं।

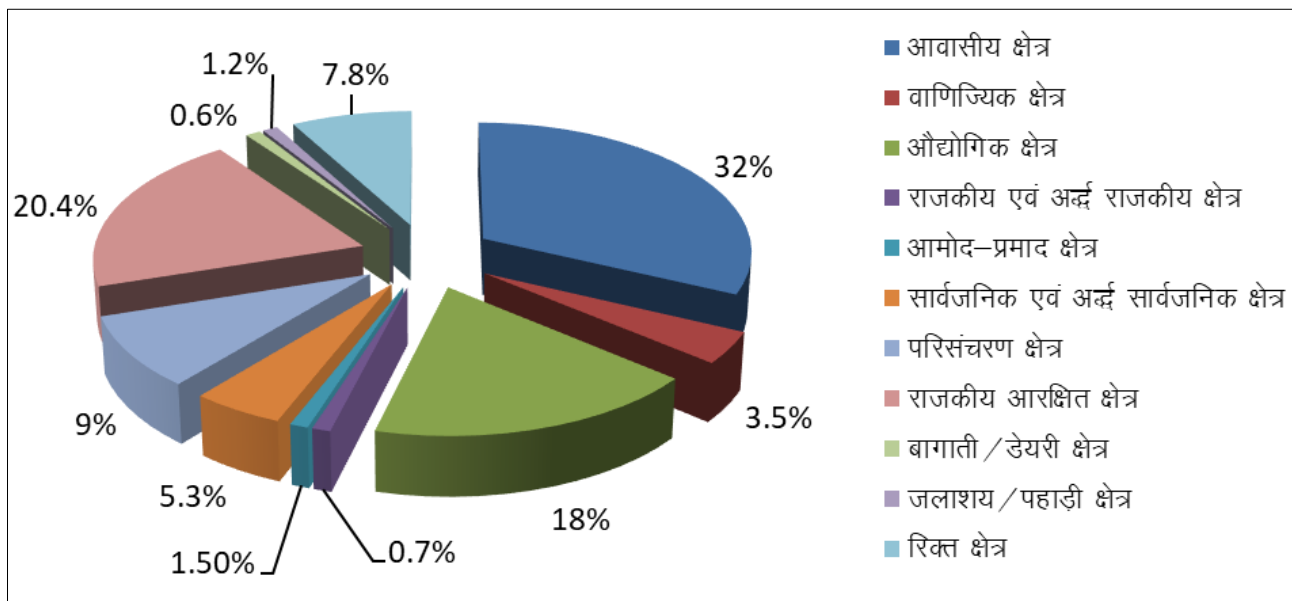
तालिका 2: अलवर शहर का भूमि उपयोग— वर्ष 2011

क्र.सं.	भूमि उपयोग	भू-उपयोग (हेक्टेयर में)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	नगरीकृत क्षेत्र का प्रतिशत
1.	आवासीय क्षेत्र	1858	45.60	32.00
2.	वाणिज्यिक क्षेत्र	196	4.80	3.50
3.	औद्योगिक क्षेत्र	1055	26.00	18.00
4.	राजकीय एवं अर्द्ध राजकीय क्षेत्र	42	1.00	0.70
5.	आमोद-प्रमाद क्षेत्र	84	2.00	1.50
6.	सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक क्षेत्र	309	7.60	5.30
7.	परिसंचरण क्षेत्र	526	13.00	9.00
	कुल विकसित क्षेत्र	4070	100.00	70.00
8.	राजकीय आरक्षित क्षेत्र	1182	—	20.40
9.	बागाती/डेयरी क्षेत्र	35	—	0.60
10.	जलाशय/पहाड़ी क्षेत्र	70	—	1.20
11.	रिक्त क्षेत्र	450	—	7.80
	कुल नगरीकृत क्षेत्र	5807	—	100.00

स्रोत : सर्वेक्षण नित्या अरबन स्केप, जयपुर।



आरेख 2: अलवर शहर के विकसित क्षेत्र का भूमि उपयोग—वर्ष 2011



आरेख 3: अलवर शहर के नगरीकृत क्षेत्र का भूमि उपयोग—वर्ष 2011

अलवर शहर के भूमि उपयोग में आवासीय क्षेत्र 1858 हेक्टेयर है, जो कि विकसित क्षेत्र का 45.60 प्रतिशत एवं नगरीकृत क्षेत्र का 32 प्रतिशत है, वहीं औद्योगिक क्षेत्र 1055 हेक्टेयर है, जो कि

विकसित क्षेत्र का 26 प्रतिशत एवं नगरीकृत क्षेत्र का 18 प्रतिशत है, इसी प्रकार सार्वजनिक एवं अर्द्ध-सार्वजनिक क्षेत्र 309 हेक्टेयर है, जो कि विकसित क्षेत्र का 7.60 प्रतिशत एवं नगरीकृत क्षेत्र का

5.30 प्रतिशत है एवं परिसंचरण क्षेत्र 526 हैक्टेयर है, जो कि विकसित क्षेत्र का 13 प्रतिशत तथा नगरीकृत क्षेत्र का 9 प्रतिशत है। अलवर शहर के भूमि उपयोग में कुल विकसित क्षेत्र 4070 हैक्टेयर है, जो कि नगरीकृत क्षेत्र का 70 प्रतिशत है एवं कुल नगरीकृत क्षेत्र 5807 हैक्टेयर है।

भूमि उपयोग में परिवर्तन (ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र)

अलवर शहर के ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र के भूमि उपयोग में परिवर्तन को वन क्षेत्र में कमी, कृषि अयोग्य भूमि में वृद्धि, पड़त भूमि में कमी, आवासीय क्षेत्र में वृद्धि, वाणिज्यिक क्षेत्र में वृद्धि, औद्योगिक क्षेत्र में वृद्धि, नई एवं पक्की सड़कों का निर्माण, बंजड़ भूमि में कमी, वास्तविक बोया हुआ क्षेत्र में कमी, स्थाई चरागाह तथा अन्य गोचर भूमि में कमी, वृक्षों के झुंड तथा बाग क्षेत्र में कमी, ऊसर भूमि में कमी, डेयरी क्षेत्र का विकास, जलाशय/पहाड़ी क्षेत्र में कमी, मनोरंजन क्षेत्र का विकास, राजकीय एवं अर्द्ध राजकीय क्षेत्र, सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक क्षेत्र आदि बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है।

1. वन क्षेत्र में कमी

जनसंख्या गत्यात्मकता के साथ शहरी एवं उपान्त क्षेत्रों में वनों का विनाश हुआ है, जिससे यहाँ के भूमि उपयोग में लगातार परिवर्तन हुआ है। प्राचीन समय से ही किसी भी क्षेत्र में लोगों को आवास उपलब्ध करवाने एवं अन्य सुविधाओं के विकास के लिए सर्वप्रथम वहाँ स्थित जंगलात तथा वनों का सफाया किया जाता रहा है। अध्ययन क्षेत्र में अवर्गीकृत श्रेणी के वनों की अवैध कटाई वर्तमान समय में भी की जाती है।

2. कृषि अयोग्य भूमि में वृद्धि

अलवर शहर का वर्तमान ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र एक समय में फसल उत्पादन के लिए अत्यन्त उपजाऊ क्षेत्र था, जिसमें रबी, खरीफ एवं जायद तीनों प्रकार की फसलें उत्पादित की जाती थी। वर्तमान समय में बढ़ते जनसंख्या दबाव के कारण कृषि योग्य भूमि को अन्य कार्यों में उपयोग में लिया जाने लगा है, जिससे कृषि अयोग्य भूमि में वृद्धि हो रही है, परिणामस्वरूप अलवर शहर के ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र का भूमि उपयोग बदल रहा है।

3. पड़त भूमि में कमी

विगत दशकों में अलवर शहर के ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में चालू एवं अन्य पड़त भूमि में कमी दर्ज की गयी है, जिसका प्रमुख कारण जनसंख्या दबाव का बढ़ना रहा है। क्षेत्र में कृषि योग्य भूमि में दिनों-दिन कमी हो रही है, वहीं जो भूमि कृषि योग्य है, उसमें गहन मिश्रित कृषि की जा रही है, कृषि योग्य भूमि की अल्पता के कारण, भूमि को पड़त छोड़ने के बजाय विभिन्न रासायनिक एवं जैविक खादों का प्रयोग कर उपयोग में लिया जा रहा है। ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में पड़त भूमि में कमी, यहाँ के भूमि उपयोग में परिवर्तन को दर्शाता है।

4. आवासीय क्षेत्र में वृद्धि

अलवर शहर की पुरानी बसी कॉलोनियों एवं घने बसे भागों की अधिक भीड़भाड़, ट्रैफिक जाम एवं प्रदूषण से तंग आकर लोग ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में निवास करने को मजबूर हो रहे हैं एवं अनेक लोग स्वेच्छा से उपान्त क्षेत्र में विस्थापित हो रहे हैं। बाहरी क्षेत्रों अर्थात् जिले के दूर-दराज गाँवों, दूसरे जिलों, दूसरे राज्यों से आप्रवास कर आए लोग जो कि औद्योगिक इकाइयों एवं मजदूरी जैसे कार्यों में लगे हुए हैं, सस्ती आवासीय सुविधाओं के कारण ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में निवास को प्राथमिकता देते हैं।

5. वाणिज्यिक क्षेत्र में वृद्धि

अलवर शहर में नगरीकरण बढ़ने का प्रभाव, ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र पर स्पष्ट रूप से पड़ रहा है, जिस हेतु क्षेत्र में जन सुविधाएँ विकसित की जा रही हैं, आवासीय क्षेत्र में लगातार वृद्धि की जा रही है परिणामतः वाणिज्यिक गतिविधियों का विकास हो रहा है, जो कि ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में भूमि उपयोग में हो रहे परिवर्तन को स्पष्ट करता है।

6. औद्योगिक क्षेत्र में वृद्धि

अलवर शहर में नगरीकरण बढ़ने के कारण ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में अनेक आर्थिक गतिविधियाँ भी बढ़ रही हैं। क्षेत्र के आर्थिक विकास एवं लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए औद्योगिक क्षेत्र में कार्य किए जा रहे हैं, परिणामतः औद्योगिक इकाइयों एवं गतिविधियों का विकास किया जा रहा है, जिस कारण ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र का भूमि उपयोग परिवर्तित हो रहा है।

7. बंजड़ भूमि में कमी

अलवर शहर के ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में विगत दशकों में गहन कृषि की जाने लगी है, जिस कारणवश बंजड़ भूमि को उपचारित कर फसल उत्पादन किया जाने लगा है, जिसमें भी फल, सब्जी, फूल आदि का उत्पादन किया जाने लगा है। जिस क्षेत्र में भूमि को उपजाऊ भूमि में परिवर्तित नहीं किया जा सका है, वहाँ आवासीय, औद्योगिक, व्यावसायिक, वाणिज्यिक, शैक्षणिक, पर्यटन, मनोरंजन आदि केन्द्रों के रूप में चिह्नित कर विकास प्रारम्भ कर दिया गया है अथवा भविष्य में विकास किया जाना प्रस्तावित है।

8. वास्तविक बोया हुआ क्षेत्र में कमी

अध्ययन क्षेत्र में खाद्यान्न, तिलहन, दलहन एवं नकदी फसलों का उत्पादन किया जाता है, वर्तमान समय में स्थानीय किसानों का रुख नकदी फसलों की तरफ बढ़ा है। क्षेत्र में फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विभिन्न नवीन तकनीकों से सिंचाई की जाने लगी है, जिसमें फव्वारा विधि, बूंद-बूंद सिंचाई विधि प्रमुख हैं, उन्नत किस्म के बीजों, रासायनिक व जैविक उर्वरकों का प्रयोग किया जा रहा है। विगत दशकों में अलवर शहर के ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में वास्तविक बोये हुए क्षेत्र में कमी हो हुई है, जिससे यहाँ के भूमि उपयोग में परिवर्तन आया है।

9. डेयरी क्षेत्र

अलवर शहर की बढ़ती हुई आकारिकी एवं तीव्र जनसंख्या वृद्धि के भरण-पोषण में दुग्ध एवं उससे निर्मित उत्पादों की अहम भूमिका है। विगत वर्षों में शहरी क्षेत्र की बढ़ती हुई आबादी की दुग्ध आपूर्ति के लिए ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में लगातार दुधारू पशुओं की संख्या में वृद्धि की जा रही है, यहाँ के निवासी गहन मिश्रित कृषि के साथ-साथ पशुपालन पर विशेष जोर दे रहे हैं।

10. मनोरंजन क्षेत्र

किसी आवासीय क्षेत्र के निकट मनोरंजन क्षेत्र विकसित करना नियोजित क्षेत्र की एक आधारभूत संकल्पना है। किसी भी नगर के मास्टर प्लान में आवासीय, औद्योगिक, वाणिज्यिक, परिवहन एवं अन्य जनसुविधाओं हेतु क्षेत्र निर्धारण करने के साथ-साथ पार्क, मनोरंजन एवं खेल-कूद के लिए भी क्षेत्र निर्धारित कर दिया जाता है। अलवर शहर के मास्टर प्लान 2031 में मनोरंजन क्षेत्र निर्धारित किया गया है, जिसके तहत इसका विकास किया जा रहा है। अलवर शहर के ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में मनोरंजन क्षेत्र का विकास भूमि उपयोग में परिवर्तन को दर्शाता है।

11. रिक्त क्षेत्र

नगरीय नियोजन संकल्पना में रिक्त क्षेत्र वह क्षेत्र होता है, जो कि कम से कम आधा हैक्टेयर या उससे अधिक होता है, जिसमें ना तो खेती की जाती है और ना ही अन्य मानवीय गतिविधियों का संचालन होता है। इस भू-भाग में प्रत्येक आधे हैक्टेयर पर पाँच या उससे कम संख्या में वृक्ष उगे होते हैं एवं यत्र-तत्र झाड़ियाँ भी उग जाती हैं। इस भू-भाग को विविध उपयोगों हेतु प्रयुक्त किया जा सकता है। अलवर शहर के ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में रिक्त क्षेत्र का मिश्रित उपयोग हो रहा है, जिस कारण यहाँ का भूमि उपयोग परिवर्तित हो रहा है।

12. सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक क्षेत्र

अलवर शहर के ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में सरकार द्वारा सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक क्षेत्र तय किये गये हैं, जिनमें चिकित्सालय, विद्यालय, महाविद्यालय, पूजा स्थल, श्मशान, धर्मशाला आदि का निर्माण किया गया है, साथ ही अन्य का किया जाना प्रस्तावित है। पूर्व में भूमि के इस भाग पर कृषिगत क्रियाकलाप किए जाते थे, लेकिन वर्तमान में यह भूमि उपयोग बदल चुका है।

13. मलिन बस्तियों का प्रसार

अलवर शहर में आवास की उपलब्धता में कमी के कारण बाहर से आने वाले गरीब एवं मजदूर आप्रवासी ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में खुली एवं सरकारी भूमि पर कच्चे मकान या झोपड़ी बनाकर रहने लगते हैं। इसके कारण इस उपान्त क्षेत्र में मलिन बस्तियाँ बस जाती हैं। इन बस्तियों में जनसुविधाओं जैसे बिजली, पेयजल, जलनिकासी, सीवरेज, पक्की सड़क आदि की समुचित व्यवस्था की कमी रहती है।

निष्कर्ष

विगत दशकों में अलवर शहर एवं इसके निकटवर्ती क्षेत्र में तीव्र जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीकरण के कारण इसके ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र के भूमि उपयोग में लगातार परिवर्तन हो रहा है। ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग एवं वास्तविक बोये गये क्षेत्र में लगातार कमी हो रही है, जिसके स्थान पर लोगों को आवास, वाणिज्यिक, औद्योगिक, शिक्षा, रोजगार तथा अन्य जनसुविधाएँ उपलब्ध करवाने के लिए नियोजित क्षेत्रफल में भी लगातार वृद्धि की जा रही है। शहर के आन्तरिक भाग से लोग ग्रामीण-नगरीय उपान्त क्षेत्र में स्थानान्तरित हो रहे हैं, जिस कारण यहाँ इस क्षेत्र में भी नगरीकरण का प्रभाव देखा जा सकता है।

सन्दर्भ

1. बंसल, सुरेश चन्द्र. नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2023. पृ.सं. 84-93
2. सक्सेना, एच.एम. राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2022, पृ. सं. 56-61.
3. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, अलवर जिला, 2021. पृ.सं. 23-43
4. प्रशासनिक प्रगति प्रतिवेदन, अलवर जिला, 2021. पृ.सं. 35-48
5. गौतम, अल्का, कृषि भूगोल, शारदा प्रकाशन, प्रयागराज, 2020. पृ.सं. 51-54
6. जोशी, रतन, नगरीय भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2020. पृ.सं. 63-68